ज्ञान और मूल्य—मदरसा शिक्षा के संदर्भ में

सूफ़िया नाज़नीन*

शिक्षा जहाँ सामाजिक पुनर्निर्माण एवं सांस्कृतिक विकास पर बल देती है, वहीं सभ्यता के मापक यंत्र के रूप में भी कार्य करती है। अन्य धर्मों के समान इस्लाम धर्म में भी शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कुरान के अनुसार तालीम (शिक्षा) निजात (मुक्ति) का साधन है। एक बच्चे को दिए जाने वाले सारे उपहारों में सबसे उत्तम उपहार उसे अच्छी और उदार शिक्षा देना है। शिक्षा और मूल्य में घनिष्ठ संबंध होता है। मूल्य जहाँ व्यक्ति की पसंद-नापसंद, आवश्यकता, इच्छा, संस्कृति द्वारा निर्धारित मानकों एवं सही-गलत की अवधारणा को दर्शाते हैं, वहीं शिक्षा इन मानकों की प्राप्ति और उनके स्तर तक पहुँचने में योगदान देती है। इस्लाम में भी धर्म, एकता, शक्ति, सत्य, न्याय, प्रेम, सुंदरता आदि मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है और इन मूल्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा एवं शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया गया है। इस लेख के माध्यम से मूल्य एवं मूल्य शिक्षा के महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ मूल्य निर्धारण में मदरसा एवं उनके शिक्षकों की भूमिका को जानने का प्रयास किया गया है। मुस्लिम समुदाय में मदरसे आज भी शिक्षा प्रदान करने वाली प्रमुख औपचारिक संस्थाएँ हैं और मदरसा शिक्षक अपने विचारों और व्यवहारों को आदर्श रूप में प्रस्तुत करके, पैग़ंबरों एवं उलेमाओं के जीवन परिचय से अवगत करवाकर, विद्यार्थियों में अंतर्निहित गुणों को सृजनात्मक दिशा प्रदान कर एवं सहपाठ्यचारी क्रियाओं के माध्यम से मदरसा शिक्षार्थियों में आवश्यक नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास कर सकते हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा सभ्यता के विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह जहाँ सामाजिक पुनर्निर्माण एवं सांस्कृतिक विकास पर बल देती है, वहीं सभ्यता के मापक यंत्र के रूप में भी कार्य करती है। यह केवल सामाजिक प्रगति पर ही ध्यान नहीं देती बल्कि समाजोत्थान हेतु नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक विकास आदि पर भी बल देती है। गांधी जी ने सत्य ही कहा है, *"शिक्षा संपूर्ण जीवन की तैयारी, वातावरण के साथ समायोजन, चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समन्वित विकास है।"* (भावानुवाद–फ़ैसल 2011, पृ. 72) अर्थात् शिक्षा न केवल तीन 'आर' (रीडिंग, राइटिंग, अर्थमैटिक) का प्रशिक्षण प्रदान करती है, बल्कि

* *शोध छात्रा* (जे.आर.एफ़.)शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)–221005

यह हस्तकला के ज्ञान, चारित्रिक एवं नैतिक गुणों के सृजन एवं मानसिक शक्तियों के विकास के माध्यम से बालक के हाथ, हृदय एवं मस्तिष्क का गुणात्मक विकास भी करती है। सामान्य शब्दों में यह बालक को आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं भौतिक सुविधाएँ प्रदान कर बालक के अंतर्निहित गुणों को उजागर करती है।

शिक्षा प्रमुख रूप से बालक के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के चहुँमुखी विकास का माध्यम है। यह जहाँ बालक के व्यक्तित्व में विद्यमान अवगुणों का मार्गांतरीकरण एवं शोधन करती है, वहीं नवीन एवं उपयोगी गुणों का सृजन भी करती है।

शिक्षा की महत्ता पर सभी धर्मों और उनके दर्शनों में प्रकाश डाला गया है। अन्य धर्मो के समान इस्लाम धर्म में भी शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस्लाम धर्म का विकास हज़रत मोहम्मद (स.अ.व.) की शिक्षाओं के फलस्वरूप छठी शताब्दी ईसवी में अरब में हुआ। कालांतर में यह धर्म संपूर्ण विश्व में फैल गया।

इस्लाम में शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। *कुरान शरीफ़* में तालीम (शिक्षा) को निजात (मुक्ति) का साधन बताया गया है (राय 2005, पृ. 214)। ज्ञान एवं शिक्षा दोनों को ही इस्लाम धर्म में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। दोनों ही इस्लाम धर्म के अभिन्न अंग हैं। इस्लाम अपने अनुयायियों को धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ ज्ञान की अन्य शाखाओं को जानने एवं उन्हें सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। वास्तव में इस्लाम में शिक्षा को एक व्यापक रूप में परिभाषित किया गया है। यह व्यक्ति को एक विशिष्ट प्रकार के आचरण के अनुरूप कार्य करने को तैयार करती है, ताकि हृदय समस्त सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से परिशुद्ध होकर बौद्धिकता के उस स्तर को प्राप्त कर सके जिससे मानवता को सत्य की साक्षात् अनुभूति हो सके। *कुरान* के अनुसार, दिव्य प्रकटीकरण एवं पैग़ंबर को भेजने का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र में ज्ञान का संप्रेषण करना था (भावानुवाद–कासमी (संपा.), 2006, पृ. 218। पैग़ंबर को दिव्य प्रकटीकरण कराने का मुख्य कारण, अपने अनुयायियों में ज्ञान और बुद्धि का संचार करना था। अल्लाह चाहता है कि उसका प्रत्येक अनुयायी धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ वृहद बौद्धिक ज्ञान प्राप्त कर पूर्ण शिक्षित हो जाए।

इस्लाम में ज्ञान की अवधारणा (Concept of Knowledge in Islam)

इस्लाम में ज्ञान को 'सत्य को जानने की अवस्था' के रूप में परिभाषित किया जाता है। मनुष्य को जो ज्ञान दिया गया है वह फ़रिश्तों (ईशदूतों) को भी नहीं प्राप्त है। जब फ़रिश्तों ने हज़रत आदम (अस.) की उच्चता पर प्रश्न उठाया तो उनके ज्ञान के कारण ही अल्लाह के आदेश पर फ़रिश्ते उनके आगे सिर झुकाने को तैयार हो गए (भावानुवाद, www.edublogspot.in)। इस्लाम में शिक्षा की महत्ता का सबसे बड़ा प्रमाण *कुरान* है, जिसकी सबसे पहली अवतरित आयत ज्ञान प्राप्ति का संदेश देती है–

"ऐ नबी, पढ़िए, अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, इंसान की रचना की, पढ़िए आपका रब बड़ा उदार है जिसने कलम के द्वारा ज्ञान सिखाया, इंसान को वह ज्ञान दिया, जिसे वह न जानता था।" (करजावी, 2000, पृ. 18)

अल्लाह ने ही इंसान को बनाया है और ज्ञान अर्जित करने हेतु कुछ यंत्र जैसे–सुनने एवं देखने की शक्ति एवं बुद्धि प्रदान की है। *कुरान* के अनुसार– *''अल्लाह ने ही तुम्हें तुम्हारी माँ के गर्भ से बाहर निकाला है, जबकि तुम कुछ नहीं जानते थे और उसने ही तुम्हें सुनने, देखने एवं हृदय से महसूस करने की शक्ति प्रदान की है, जिसके लिए तुम्हें उसका शुक्रगुज़ार होना चाहिए''* (भावानुवाद–www.edu.blogspot.in)। इस्लाम ज्ञान की खोज हेतु अपने अनुयायियों को प्रेरित करता है। ज्ञान ही है जिसके कारण अल्लाह अपने प्रतिनिधियों का सम्मान करता है, वह उन्हें सिखाता है, ताकि वे इसे मानव मात्र को सिखा सकें। इस्लाम धर्म के अनुयायियों पर पहली और सबसे महत्वपूर्ण शर्त ज्ञान अर्जित करना है और दूसरी, इस ज्ञान का अभ्यास एवं प्रसार करना है। कोई भी व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि अपने ज्ञान से मुसलमान बनता है। अज्ञानता की स्थिति में रहते हुए मुसलमान नहीं बना जा सकता। यदि हम ज्ञान के प्रकाश को स्वयं में समाहित कर लें तो हम जीवन के प्रत्येक पद पर इस्लाम के बताए मार्ग को स्पष्ट रूप से देख पायेंगे और बुराइयों से बच पायेंगे। ज्ञान प्राप्ति द्वारा ही अल्लाह के निकट जाया जा सकता है।

ज्ञान प्राप्ति हेतु इस्लाम में ज्ञानेंद्रियों, स्वानुभव, प्रत्यक्षण आदि के माध्यम से सीखने की बात की गयी है न कि रटने और अंधानुकरण करने की प्रवृत्ति अपनाने से। शिक्षा के माध्यम से ही मस्तिष्क एवं मानसिक शक्तियों को प्रशिक्षित किया जा सकता है। अंधकार से प्रकाश की ओर, नुकसान से फ़ायदे की ओर एवं गलत से सही की ओर बढ़ा जा सकता है। इस्लाम ने ज्ञान को वह प्रकाश बताया है जिससे व्यक्ति दीन (परलोक) एवं दुनिया (लोक) दोनों जगत में मार्गदर्शन पाता है और जीवन के परम उद्देश्य को सफ़लतापूर्वक प्राप्त करता है। इस संबंध में अल्लामा युसुफ़ करजावी लिखते हैं कि *''इल्म (ज्ञान) वह जबरदस्त कुवत (ताकत) है, जिसकी बदौलत इंसान अपनी ज़िदगी को फैलाता है और अपने वजूद को वुसअत (विस्तार) से हमकिनार (सँवारता) करता है। फिर वह सिर्फ अपने बारे में ही नहीं सोचता और न ही सिर्फ अपने इर्द–गिर्द ही देखता है बल्कि इन दायरों से आगे–बढ़कर माज़ी (अतीत) में भी झाँकता है, हाल (वर्तमान) की रौशनी में मुस्तक़बिल (भविष्य) को भी समझने की कोशिश करता है और कायनात (संसार) की सारी वुसअत (विस्तार) के बारे में भी गौरोफिक्र (चिंतन) करता है।''* (करजावी 2000, पृ. 29)

अतः अल्लामा युसुफ़ करजावी द्वारा लिखित उक्त पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि इस्लाम में ज्ञान प्राप्ति पर प्रमुखता से बल दिया गया है ताकि इंसान इल्म (ज्ञान) की रोशनी में अपनी कमियों को दूर कर सकें, अपने अंदर की बुराइयों को मिटा सकें और अपने अंदर उन गुणों का विकास कर सकें जिसके माध्यम से न केवल वह अपने अतीत की कमियों को मिटाते हुए अपने वर्तमान एवं भविष्य को सँवारे बल्कि संपूर्ण समाज के वर्तमान एवं भविष्य को सँवारने में अपना योगदान दे सकें।

मूल्य (Values)

मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत वे मानक होते हैं जो समाज का अंग होने के नाते इकाइयों, व्यक्तियों एवं परिस्थितियों का मूल्यांकन करते हैं। ये मूल्य समाज की रीढ़ की हड्डी के समान होते हैं। ये, वो विश्वास हैं जिन्हें व्यक्ति किसी दी

हुई परिस्थिति में क्रिया करने हेतु चुनता है। कोई आदर्शात्मक, नैतिक अथवा आध्यात्मिक सिद्धांत, जो किसी दी हुई परिस्थिति में हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं और जिन पर हमारा व्यवहार आधारित होता है, मूल्य कहलाते हैं। मूल्य समाज दर समाज एवं समय-दर-समय बदलते रहते हैं। हमारा जीवन इन मूल्यों के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। ये मूल्य सही और गलत के हमारे निर्णय द्वारा ही निर्धारित होते हैं। मूल्य वे अंतहीन विश्वास होते हैं, जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक रूप से स्वीकृत एक निश्चित व्यवहार को निर्धारित करते हैं। मूल्य की तीन प्रमुख विशेषताएँ होती हैं-

- ये जीवन के प्रारंभिक वर्षों में निर्मित होते हैं और शीघ्रता से परिवर्तित नहीं होते।
- मूल्य सही और गलत को परिभाषित करते हैं।
- मूल्य स्वयं को सत्य, असत्य, वैध-अवैध अथवा सही-गलत सिद्ध नहीं करते।

आलपोर्ट (1950) के अनुसार, *"कोई भी चीज़ जो संतुष्टि उत्पंन करती है, मूल्य के रूप में पहचानी जाती है।"* (भावानुवाद—भास्कराचार्युलू एवं राव 2009, पृ. 27-28)

इस प्रकार मूल्य व्यक्ति की पसंद-नापसंद, आवश्यकता, इच्छा एवं संस्कृति द्वारा निर्धारित मानकों को दर्शाते हैं। मानव के दिन-प्रतिदिन के जीवन में उनके व्यवहार एवं क्रियाओं को नियंत्रित एवं मार्गदर्शित करने का कार्य मूल्य ही करते हैं। प्रत्येक शब्द जो हम बोलते हैं, वस्त्र जो हम पहनते हैं, जिस प्रकार से हम एक-दूसरे के साथ अंत:क्रिया करते हैं, हमारे प्रत्यक्षीकरण आदि सभी में मूल्य प्रदर्शित होते हैं। मूल्य रुचि, विकल्प, आवश्यकता, इच्छा एवं वरीयता के आधार पर निर्मित होते हैं। मूल्य में भावनाओं एवं क्रियाओं के चिंतन, जानने अथवा समझने की प्रक्रिया निहित रहती है। लोगों का व्यवहार हमें उनके मूल्यों को जानने में मदद करता है। किसी व्यक्ति पर किसी प्रकार का दबाव अथवा डर दिखाये बिना किसी निश्चित समय में उसके द्वारा किये जाने वाले व्यवहार अथवा क्रिया के माध्यम से उसके मूल्यों का आकलन किया जा सकता है। सामान्यत: मूल्य व्यक्ति के स्वयं के चयन द्वारा निर्धारित होते हैं। मूल्य मुख्यत: निम्नलिखित तीन आयामों पर निर्धारित होते हैं- (भावानुवाद—सुकुमार 2009, पृ. 10)

(i) व्यक्ति का आत्म।
(ii) आत्म एवं अन्य व्यक्ति जिनके साथ वे प्रतिदिन अंत:क्रिया करते हैं।
(iii) सामाजिक मानक।

हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में व्यक्ति का व्यवहार उपरोक्त वर्णित तीनों आयामों पर आधारित हमारे मूल्यों द्वारा निर्मित होता है। उदाहरणस्वरूप, आत्मसम्मान एवं व्यक्तिगत आध्यात्मिक मूल्य व्यक्ति के आत्म (Self) को नियंत्रित करते हैं। हमारे माता-पिता, परिवार एवं अन्य लोगों के साथ हमारे संबंध अंतर्वैक्तिक आयाम द्वारा नियंत्रित होते हैं और समाज में हमारा व्यवहार दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने पर निर्धारित एवं नियंत्रित होता है।

मूल्य के प्रकार (Types of values)

मूल्य मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं-

- यांत्रिक मूल्य **(Instrumental values)** जैसे- रुचि, ऐश्वर्य, समृद्धि आदि।
- **आत्मिक मूल्य (Intrinsic values)** जैसे-स्वास्थ्य, सम्मान, पवित्रता आदि। (भावानुवाद—भास्कराचार्युलू एवं राव 2009 पृ. 28)।

यांत्रिक मूल्य जहाँ विरोधाभास उत्पंन करते हैं वहीं आत्मिक मूल्य शांति एवं सहयोग लाते हैं।

सन् 1979 में बी.आर. गोयल द्वारा 83 मूल्यों की एक सूची बनायी गयी। तत्पश्चात् डॉ. वी.के. गोकक ने 1981 में इन मूल्यों को पाँच आधारभूत मानवीय मूल्यों के रूप में वर्गीकृत किया। इस प्रकार ये पाँच मानवीय मूल्य मुख्य मूल्यों की श्रेणी में और इनके अंतर्गत आने वाले अन्य मूल्य उपमूल्यों की श्रेणी में आते हैं। ये पाँच मानवीय मूल्य हैं- सत्य (Truth), अच्छा चरित्र (Right conduct), शांति (Peace), प्रेम (Love) एवं अहिंसा (Non-voilence) (भावानुवाद–कुमार, 2009, पृ. 17)

ये पाँच मानवीय अथवा मुख्य मूल्य सार्वभौमिक रूप से सभी धर्मों द्वारा स्वीकार किये जाते हैं परंतु इनकी तुलना में उपमूल्य अधिक प्रेक्षणीय होते हैं जबकि मुख्य मूल्य की सही पहचान कर पाना कभी-कभी कठिन हो जाता है क्योंकि कभी-कभी कुछ व्यक्ति इनका दिखावा भी करते हैं जबकि वास्तव में वे इसे हृदय से अपनाते नहीं हैं।

इस्लाम में मूल्य की अवधारणा (Concept of value in Islam)

मूल्य वे हैं, जिन्हें किसी व्यक्ति द्वारा महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता हैं, जो किसी निश्चित व्यवहार अथवा क्रिया करते समय सही एवं गलत के अंतर को व्यक्त करते हैं और व्यक्ति को सही करने के लिए प्रेरित करते हैं। ये चरित्र के नैतिक एवं नीतिशास्त्रीय गुण होते हैं। इस्लाम धर्म में भी कुछ आधारभूत मूल्यों का पालन करने का आदेश दिया गया हैं। इंसान इन मूल्यों के बिना जीवित नहीं रह सकता। व्यक्तियों को इन मूल्यों का पालन एवं सम्मान करने की सलाह दी गयी है, ये मूल्य हैं-

1. धर्म (Religion) इस्लाम में धर्म को प्रत्येक व्यक्ति के लिए आधारभूत मूल्य अथवा अधिकार बताया गया है। प्रत्येक व्यक्ति अपना धर्म चुनने के लिए स्वतंत्र है, किसी को भी किसी धर्म विशेष को अपनाने एवं उसका पालन करने हेतु बाध्य नहीं किया जा सकता। धर्म व्यक्ति को उसके जीवन का उद्देश्य बताने, मार्गदर्शन, शांति एवं सहयोग के लिए होता है। धर्म व्यक्ति को सत्य, न्याय एवं अन्य गुणों की शिक्षा देता है। साथ ही हर प्रकार की बुराई से दूर रहने की शिक्षा देता है। *कुरान* के अध्याय 2 की 256वीं आयत में अल्लाह ने कहा है, *''धर्म में कोई भी अनिवार्यता नहीं है, सत्य त्रुटियों को स्पष्ट करता है।''* (भावानुवाद– www.edu.blogspot.in)

2. अमरत्व (Eternity) सामान्यतः यह गुण संपूर्ण रूप से अल्लाह का है। मानव यद्यपि नश्वरता के गुण के साथ निर्मित हुआ है तथापि उसके अंदर अमरता के गुण को प्राप्त करने की इच्छा विद्यमान रहती है जो कभी समाप्त नही होती। इस्लाम में व्यक्ति के लिए नश्वर से अनश्वर जीवन की प्राप्ति का मार्ग खुला रखा गया है।

3. एकता (Unity) एकता का आदर्श, परिवार के सदस्यों के बीच शांति एवं सहयोग लाता है। यह राष्ट्र के सदस्यों अथवा आदर्श समूहों के बीच एक घनिष्ठ संबंध की स्थापना करता है। कुरान के अनुसार, ''सभी मुस्लिम आपस में भाई हैं और उनके बीच घनिष्ठ प्रेम एवं लगाव है।''

4. शक्ति (Power) इस्लाम द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को सही एवं गलत में अंतर करने की शक्ति

प्रदान की गयी है। वह जो भी क्रियाएँ करता है उसके लिए वह अकेला ही उत्तरदायी होता है। शक्ति का आदर्श व्यक्ति से आशा करता है कि वह शांति, विचारों की स्वतंत्रता, विश्वास एवं अभिव्यक्ति करने की स्वतंत्रता आदि गुणों पर आधारित राज्य की स्थापना करे, जिसकी प्राप्ति हेतु नैतिकता से युक्त व्यक्तियों के परिश्रम करने की आवश्यकता है।

5. सत्य या बुद्धि (Truth or Wisdom) सत्य अथवा ज्ञान की खोज हेतु बुद्धि एक मानवीय आदर्श के रूप में कार्य करती है। यह अपूर्ण ज्ञान एवं विश्वासों के बीच अंतर करती है। अत: व्यक्ति को सत्य की प्राप्ति हेतु प्रकृति के कण-कण में विद्यमान छुपी हुई अवधारणाओं का गहनता से अध्ययन करना चाहिए।

6. ज्ञान (Knowledge) ईश्वर ही ज्ञान है, वह ही सत्य है। वह हर तत्त्व का साक्षी है। वास्तव में पृथ्वी अथवा स्वर्ग कहीं पर भी एक अणु के आकार की वस्तु भी उससे छिपी हुई नहीं है। हर ढकी और खुली चीज़ का उसे ज्ञान है। हमारे मस्तिष्क में क्या छिपा है, हम उसे दिखायें या छिपायें, हर परिस्थिति में उसे उनका ज्ञान है और इसी ज्ञान को वह मानव मात्र को स्वयं में जागृत करने की प्रेरणा देता है।

7. न्याय (Justice) अल्लाह न्याय करने में उत्तम है और वह अपने बंदों के साथ कभी अन्याय नहीं करता। वह सभी प्राणियों को स्वयं के साथ एवं दूसरों के साथ दोनों ही परिस्थितियों में न्याय करने एवं निष्पक्ष व न्यायपूर्ण व्यवहार करने की प्रेरणा देता है।

8. प्रेम (Love) इस्लाम में प्रेम पर विशेष बल दिया गया है। ईश्वर प्रेम करने वाला है और अपने प्राणियों को मार्गदर्शित करने, आश्रय देने, उनकी मदद करने, निर्माण करने, पोषण करने में अपने प्रेम का प्रदर्शन करता है। अपने प्राणियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने, दया, क्षमा आदि द्वारा उसका प्रेम प्रदर्शित होता है। इस प्रकार वह अपने प्राणियों को अपने सगे-संबंधियों, मित्रों एवं समुदाय व समाज के सदस्यों के साथ वैसा ही व्यवहार करने की प्रेरणा देता है और अपेक्षा करता है कि वे उसके बताए प्रेम मार्ग पर ही चलें।

9. अच्छाई (Goodness) *कुरान* के अनुसार, *''अल्लाह सबसे अच्छा है, सभी प्रकार की बुराइयों (कुददूस) से मुक्त है। वह सभी अच्छाइयों का स्रोत और सभी प्रकार की प्रशंसा का पात्र है''* (भावानुवाद– www.edu.blogspot.in)। अच्छाई अल्लाह का गुण है और प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इन अच्छाइयों को स्वयं में अपनाये। जैसे अल्लाह सबके लिए अच्छा है वैसे ही व्यक्तियों को भी अच्छा करना चाहिए। सबके साथ अच्छा करने वालों के साथ अल्लाह भी अच्छा करता है।

10. सुंदरता (Beauty) अल्लाह ने हर वस्तु में सुंदरता का गुण विद्यमान किया है। मानव अपने सुंदर रूप में अल्लाह द्वारा बनाया गया है। अल्लाह ने संपूर्ण ब्रह्माण्ड को सुंदर बनाया है और इनके माध्यम से अच्छी शक्ति का सृजन किया है। यदि व्यक्ति इस सुंदरता को पहचान जाय तो वह अपने जीवन को सुंदर बना सकता है। अल्लाह ने कोई भी चीज़ बुरी नहीं बनायी है, उसने सभी चीज़ें अच्छी और सुंदर बनायी हैं। उसने प्रत्येक को मानवमात्र की सेवा हेतु निर्मित किया है। यदि हम इस सत्य एवं वास्तविकता को देख लें, उसे पहचान जायें तब हम सुंदरता को प्राप्त कर सकेंगे।

इस प्रकार इस्लाम में भी मूल्यों को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है और इसके प्रत्येक अनुयायी को इन मूल्यों के स्वयं में सृजन एवं इनके पालन को अनिवार्य बताया गया है।

मूल्य शिक्षा एवं मदरसा

(Value education and Madarsas)

मूल्य शिक्षा (Value Education)—समाज के आदर्शों एवं मूल्यों को अनुरूप व्यक्तियों को संतुष्ट करने एवं एक उत्तम जीवन की प्राप्ति हेतु शिक्षा आवश्यक रूप से व्यक्ति में मूल्य निर्माण की प्रक्रिया है। दार्शनिकों, शिक्षाविदों आदि सभी ने चरित्र निर्माण, अंतर्निहित गुणों के विकास अथवा समन्वित व्यक्तित्व के विकास हेतु शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है। हमारे देश की गौरवशाली भिन्नताओं से युक्त समृद्ध सांस्कृतिक विरासतें इन मूल्यों के निर्माण को आधार प्रदान करती हैं। इन मूल्यों के विकास एवं निर्माण हेतु प्राचीन समय से हमारे गुरूकुलों, आश्रमों एवं वर्तमान विद्यालयों में पृथक रूप से मूल्य शिक्षा देने पर ज़ोर दिया जाता रहा है।

मूल्य शिक्षा, शिक्षार्थी के चरित्र एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह युवाओं में एक निश्चित एवं उपयुक्त समय पर मूल्यों का विकास करती है साथ ही उनमें विद्यमान जन्मजात आत्म केंद्रीयता को नि:स्वार्थता, अपरिपक्वता को परिपक्वता, बाल्यावस्था को युवावस्था में परिवर्तित कर उन्हें एक मूक श्रोता से एक शक्तिशाली वक्ता में परिवर्तित करती है।

मूल्य शिक्षा व्यक्तित्व के हर पक्ष को ध्यान में रखते हुए बौद्धिक, सामाजिक, भावात्मक, नैतिक आदि सभी पक्षों के विकास में योगदान देती है। इसमें क्या सही है, क्या अच्छा है, क्या सुंदर है आदि चुनने की योग्यता विद्यमान रहती है। मूल्यपरक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बौद्धिकता के तीन आयामों- ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक आयामों के विकास से भी जुड़ा हुआ है। इसके द्वारा अधिगमकर्ता न केवल सही और अच्छे के बारे में जानता है बल्कि सही क्रियाएँ करने की दिशा में उपयुक्त भाव एवं वचनबद्धता का अनुभव करता है। यह व्यक्तिगत एवं मानवता से जुड़े ज्वलंत मुद्दों पर समालोचनात्मक चिंतन एवं स्वतंत्र निर्णय की योग्यता विकसित करने वाली प्रक्रिया है।

इस प्रकार मूल्य शिक्षा उत्तम मूल्य एवं चरित्र का विकास करने का उद्देश्य लिए हुए नियोजित शैक्षिक क्रियाओं से युक्त कार्यक्रम है। हमारी प्रत्येक क्रिया और विचार हमारे मस्तिष्क पर एक छाप छोड़ते हैं और यह छाप अथवा भाव ही किसी दिए हुए समय अथवा परिस्थिति में हमारी प्रतिक्रियाएँ एवं व्यवहार निर्धारित करते हैं। इन व्यवहारों एवं प्रतिक्रियाओं का मिला-जुला रूप हमारे चरित्र को निर्मित एवं निर्धारित करता है। इन व्यवहारों एवं प्रतिक्रियाओं को परिमार्जित करते हुए चरित्र निर्माण प्रक्रिया को एक निश्चित एवं सही दिशा प्रदान करना ही मूल्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। भारतीय संविधान द्वारा भी प्रस्तावना के अंतर्गत चार सार्वभौमिक मूल्यों का वर्णन किया गया है जो मूल्य शिक्षा को महत्ता प्रदान करते हैं। ये मूल्य निम्नलिखित हैं–

(i) स्वतंत्रता (Liberty) विचारों, विश्वासों, आदर्शों, भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता।

(ii) समानता (Equality) स्तरों, अवसरों की समानता।

(iii) बंधुत्व (Fraternity) व्यक्ति का सम्मान बनाये रखते हुए संपूर्ण राष्ट्र की एकता बनाये रखना।

(iv) न्याय (Justice) सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक किसी भी स्तर पर किसी भी वर्ग के साथ अन्याय न होने देना एवं एक व्यक्ति की स्वतंत्रता को दूसरे के मार्ग में बाधक न बनने देना।

इसके अतिरिक्त संविधान के अनुच्छेद 36 से 51 तक प्रदत्त मूल अधिकार एवं अनुच्छेद 51(ए) में प्रदत्त मूल कर्त्तव्य भी राष्ट्रीय मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं जो कहीं न कहीं मुख्य अथवा उपमूल्यों के ही रूप हैं। एक निश्चित एवं सही दिशा प्रदान करना ही मूल्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।

भारत में समय-समय पर गठित विभिन्न आयोगों एवं समितियों की रिपोर्टों में भी मूल्य शिक्षा प्रदान करने पर विशेष ज़ोर दिया जाता रहा है-

स्वतंत्रता के पश्चात् गठित सर्वप्रथम आयोग, *राधाकृष्णन आयोग* (1948-49)ने मूल्य शिक्षा देने पर विशेष ज़ोर दिया है। आयोग ने विद्यालयों के साथ-साथ विश्वविद्यालयों, कॉलेजों एवं महाविद्यालयों में प्रातकाल प्रार्थना सभा करने पर ज़ोर दिया, साथ ही स्नातक स्तर पर विभिन्न महापुरुषों की जीवनियों एवं उनके विचारों को पढ़ाने पर ज़ोर दिया। (भावानुवाद—एन.सी.ई.आर टी., 2012, पृ. 2)

माध्यमिक शिक्षा आयोग अथवा मुदालियार कमीशन (1952-53) ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित करते हुए स्पष्ट किया कि, शैक्षिक प्रक्रिया का अंतिम लक्ष्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का इस प्रकार प्रशिक्षण करना हो ताकि अपनी समस्त कुशलताओं को पहचानने योग्य बन सकें और समुदाय की अच्छाई में अपनी योग्यताओं के माध्यम से अपना योगदान दे सकें।

कोठारी आयोग (1964-66) ने 'शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास' पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे पाठ्यक्रमों में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य शिक्षा की कमी परिलक्षित होती है। आयोग ने इन मूल्यों की शिक्षा हेतु महान धर्मों के नैतिक मूल्यों एवं शिक्षाओं को जानने एवं सीखने का मार्ग दिखाया, साथ ही *श्रीप्रकाश आयोग* के सुझाव 'प्रत्यक्ष नैतिक अनुदेशन (Direct moral instruction) पर सहमति जतायी, जिसके अनुसार विद्यालयी शिक्षा में, सप्ताह में एक या दो काल-चक्र नैतिक शिक्षा के लिए होने चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने आवश्यक मूल्यों के ह्रास और समाज में बढ़ती स्वार्थपरता की ओर ध्यान आकर्षित किया। इसमें सामाजिक और नैतिक मूल्यों के उत्पादन हेतु शिक्षा को एक शक्तिशाली यंत्र के रूप में प्रयोग करने पर ज़ोर दिया गया साथ ही स्पष्ट किया गया कि शिक्षा द्वारा अपने लोगों में एकता और बंधुत्व को बढ़ाने हेतु सार्वभौमिक एवं कभी समाप्त न होने वाले मूल्यों का विकास करना चाहिए। *शिक्षा नीति की कार्ययोजना* (POA-1992) में विद्यालयी शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मूल्य शिक्षा के विभिन्न अवयवों को समन्वित करने का प्रयास किया गया।

भारत सरकार की मूल्य-आधारित शिक्षा की रिपोर्ट (छावन आयोग की रिपोर्ट, 1999) में शिक्षा में मूल्यों को समाहित करने पर विशेष ज़ोर दिया गया।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000) में विद्यालयी पाठ्यक्रमों में मूल्य शिक्षा को समन्वित करने पर ज़ोर दिया गया। एकता एवं बंधुत्व को बढ़ाने हेतु विद्यालयों द्वारा सार्वभौमिक मूल्यों की शिक्षा देने पर ज़ोर दिया गया, साथ ही स्पष्ट किया गया कि, संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए ताकि देश के बालक एवं बालिकाएँ अच्छा देखें, अच्छा करें एवं अच्छी वस्तुओं से प्रेम करें और पारस्परिक सहयोग के साथ जीवन निर्वाह करने वाले नागरिक बनें।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में भी स्पष्ट किया गया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि विद्यालय की प्रत्येक क्रिया में मूल्य-निर्माण की झलक दिखायी दे। पाठ्यचर्या में भिन्नता में एकता एवं मानवों के बीच पारस्परिक स्वतंत्रता के प्रति हमारी वचनबद्धता को दृढ़ करने पर ज़ोर दिया गया जो कि मूल्यों का विकास कर एक बहु-सांस्कृतिक समाज में शांति, मानवता, सहनशीलता आदि गुणों का विकास कर सकें।

इस प्रकार न केवल दार्शनिकों एवं शिक्षाविदों द्वारा ही बल्कि सरकार द्वारा भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्यों के विकास हेतु मूल्य शिक्षा प्रदान करने पर ज़ोर दिया जाता रहा है।

मदरसा शिक्षा (Madarsa Education)

भारत में मदरसा शिक्षा का विकास मुस्लिम शासन काल से देखने को मिलता है। मध्यकालीन भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन के साथ ही भारत में मुस्लिम शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ, जिसमें गुरुकुलों अथवा आश्रमों की बजाय मदरसों अथवा मकतबों में शिक्षा दी जाती थी। ये मकतब या मदरसे किसी मस्जिद के अंतर्गत ही बने होते थे। यद्यपि वर्तमान समय में इनके स्वरूपों में परिवर्तन आ गया है और आज मस्जिदों से अलग भी किसी बड़े स्थान पर मदरसों की स्थापना की जाती है।

मदरसा शब्द की व्युत्पत्ति अरबी भाषा के 'दरस' शब्द से हुई है, जिसका तात्पर्य है- व्याख्यान देना। (भावानुवाद–सिकंद 2005, पृ. 33)

सामान्यतः मदरसे वो इस्लामिक शैक्षिक संस्थाएँ हैं जो मुख्य रूप से इस्लाम में बतायी गयी विचारधाराओं, *कुरान* एवं हदीस की शिक्षा देती हैं। अपने प्रारंभिक वर्षों में मध्यकालीन भारत में स्थापित मदरसों में प्रायः *कुरान, हदीस* (पैग़ंबर मोहम्मद (स.) द्वारा बतायी गयी बातें), *शरीयत* (आचारशास्त्र) एवं अन्य इस्लामिक विचारधाराओं की ही शिक्षा दी जाती थी, परंतु वर्तमान समय में इनके अलावा ज्ञान की अन्य शाखाओं, जैसे–इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, गणित, तर्कशास्त्र, वाणिज्य एवं साथ ही साथ कंप्यूटर की भी शिक्षा प्रदान की जाने लगी है।

वर्तमान समय में भारत में लगभग 30,000 से 40,000 मदरसे संचालित हैं और इनमें परंपरागत ज्ञान के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान प्रदान करने की पूरी व्यवस्था की जा रही है ताकि इन्हें सरकार एवं निजी संस्थाओं द्वारा संचालित,नियमित एवं आधुनिक विद्यालयों के साथ जोड़ा जा सके और उनके जैसा ही स्थान प्रदान किया जा सके जिससे मदरसों से उत्तीर्ण होने वाले शिक्षार्थी नियमित विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से अपनी शिक्षा पूरी करने में सक्षम बन सकें।

मदरसों में दी जाने वाली शिक्षा के अंतर्गत भी मूल्यों की शिक्षा पर विशेष ज़ोर दिया जाता है। चूँकि इस्लाम में मूल्यों को विशेष स्थान प्राप्त है तथा इस्लाम धर्म को मानने वालों के

व्यवहार शरीयत (आचारशास्त्र) द्वारा निर्धारित किये गये हैं, इसलिए उनके व्यवहार में मूल्यों की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। परंतु आज के भौतिकवादी युग में जहाँ स्वार्थपरता, लोभ, द्वेष आदि का बोलबाला है, ऐसे समाज में कोई भी व्यक्ति चाहे वह हिंदू हो या मुस्लिम इन बुराइयों से अछूता नहीं है। हर कोई अपना स्वार्थ साधने में लगा है। हर कोई अपना हित और दूसरों का अहित करना चाहता है। ऐसी स्थिति में जहाँ नियमित विद्यालयों एवं उनके शिक्षकों का उत्तरदायित्व मूल्यों के विकास हेतु बढ़ जाता है, वहीं मदरसा शिक्षकों का उत्तरदायित्व भी बनता है कि वे मदरसों में पढ़ने वाले शिक्षार्थियों में मूल्यों का विकास प्रारम्भिक शिक्षा स्तर से ही करें ताकि इन मदरसों से निकलने वाले शिक्षार्थी एक सभ्य एवं ज़िम्मेदार नागरिक बनकर देश की सेवा करें न कि मदरसों के संदर्भ में व्याप्त मिथकों को सच बनने दें।

मूल्य निर्धारण में मदरसा शिक्षक की भूमिका (Role of Madarsa Teachers in Value formation)

मूल्यों पर व्याख्यान देकर मूल्यों का विकास नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार तैरना सिखाने के लिए प्रशिक्षक को स्वयं पानी में उतर कर तैराकी सिखानी पड़ती है, उसी प्रकार मूल्य शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक में यह योग्यता होनी चाहिए कि वह शिक्षार्थियों को जीवन—परिस्थितियों के जल में उतरने और अपने मूल्यों द्वारा उनका सामना करने हेतु स्वयं की क्रियाओं द्वारा प्रेरित करें। उनमें प्रयोगात्मक योग्यताओं का विकास करें एवं मूल्यों को अपने जीवन में निरंतर प्रयोग करने हेतु प्रशिक्षित करें।

इस्लाम में मूल्यों के विकास एवं उसके प्रयोग को विशेष महत्त्व दिया जाता है। शरीयत (आचारशास्त्र) द्वारा निर्धारित प्रत्येक व्यवहार मूल्य आधारित ही होते हैं। सही एवं गलत की अवधारणा को ध्यान में रखकर ही शरीयत द्वारा प्रत्येक मुसलमान के व्यवहार को निर्धारित किया गया है। पैग़ंबर हज़रत मोहम्मद (स.) स्वयं एक शिक्षक थे और उन्होंने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से अपने अनुयायियों में मूल्यो के विकास पर ही बल दिया। इस्लाम के प्रादुर्भाव से पहले अरब में चारों तरफ़ अज्ञानता का ही अंधकार फैला हुआ था।

अरबवासी केवल धन एवं भौतिक समृद्धि के लालच में ही अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस्लाम के प्रादुर्भाव और पैग़ंबर मोहम्मद (स.) की शिक्षाओं ने उन्हें जीवन के वास्तविक दर्शन और व्यवहार की निश्चित प्रणालियों का ज्ञान कराया, जो नैतिक प्रतिबंधों एवं सही व गलत के सिद्धांत पर आधारित थीं। इस्लाम के अनुसार, एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों में छिपी हुई योग्यताओं का ज्ञान प्राप्त कर, यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि वे नैतिक एवं बौद्धिक प्रभावों से कितनी दूर हैं, अर्थात् उसकी योग्यताएँ नैतिकता के आयामों के निकट हैं या उनसे दूर अज्ञानता एवं भौतिकता के निकट।

इसी कारण इस्लाम में धार्मिक शिक्षा पर विशेष ज़ोर दिया जाता है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति ईर्ष्या, द्वेष, घमंड, अविश्वास, झूठ आदि अवगुणों से अछूता नहीं है, इसलिए पैग़ंबर (स.) के अनुसार, मानव हृदय को दूषित करने वाली इन बुराइयों से बचाने के लिए नैतिक मूल्यों पर आधारित व्यवस्थित ज्ञान द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए (भावानुवाद, कासमी, (संपा.), 2006, पृ. 20)। यह प्रशिक्षण

कुरान एवं अन्य धार्मिक पुस्तकों जैसे हदीस आदि के माध्यम से पूर्णतया संगठित रूप में दिया जा सकता है, क्योंकि इन ग्रंथों में व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार को सही अथवा गलत के सिद्धांत की कसौटी पर परखा जाता है। अतः इस मिथक पर भी विश्वास नहीं किया जाना चाहिए कि *कुरान* एवं *हदीस* जैसे ग्रंथ धर्म के प्रचार-प्रसार अथवा धार्मिक ज्ञान से जुड़ी शिक्षाएँ ही प्रदान करते हैं।

मूल्य निर्धारण में जहाँ इन ग्रंथों का विशेष योगदान है, वहीं शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। चूँकि आज के समय में भी अधिकांश मुस्लिम बच्चे मदरसों में ही शिक्षा ग्रहण करते हैं और मदरसे आज भी मुस्लिम समुदाय की शिक्षा का प्रमुख केंद्र हैं अतः ऐसी परिस्थिति में मदरसा शिक्षकों का दायित्व भी बढ़ जाता है कि वे इन मदरसों में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालक-बालिकाओं में विभिन्न तकनीकों के माध्यम से मूल्यों का विकास करें। मूल्य निर्धारण में मदरसा शिक्षकों की भूमिकाओं को निम्नलिखित रूपों में स्पष्टतया समझा जा सकता है–

1. **शिक्षार्थियों को प्रेरित करना (To motivate the students)** शिक्षक अपने शिक्षार्थियों के लिए आदर्श होता है अतः मदरसा शिक्षकों को भी अपने व्यवहार, विचार आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करनी चाहिए। स्वयं नमाज़ और रोज़े का पाबंद (पूर्ण समर्पित भाव से पालन करना) होना चाहिए, क्योंकि *कुरान* में नमाज़ पढ़ने और रोज़े रखते समय प्रत्येक बुराई से और बुरे विचारों से दूर रहने की सीख दी गयी है। जिससे शिक्षार्थी भी नमाज़ और रोज़े के माध्यम से प्रत्येक बुराई से दूर रहने के लिए प्रेरित होंगे। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नमाज़ और रोज़ा इस्लाम में मूल्य निर्माण के प्रमुख स्रोत हैं।
2. **पैग़ंबरों, उलेमाओं की जीवनियों द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करना (Give examples of the life sketch of Prophets and Ulamas)** मदरसा शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों में सहायता, परोपकार, किसी का अधिकार न छीनना आदि गुणों का विकास करने हेतु पैग़ंबरों (अल्लाह के प्रतिनिधि), सहाबियों (पैग़ंबर मोहम्मद (स.) के बताए मार्गों पर चलने वाले उनके समकालीन) एवं उलेमाओं आदि का उदाहरण एवं उनके जीवन परिचय से अवगत कराना चाहिए।
3. विभिन्न नैतिक गुणों का विकास करना (To develop various moral virtues) मदरसा शिक्षकों को अपने शिक्षार्थियों में शांति, प्रेम, धर्मनिरपेक्षता, एकता, सहयोग, सांस्कृतिक संवर्धन, सृजनात्मकता, राष्ट्रीय एकता एवं बंधुत्व आदि गुणों के विकास हेतु निरंतर प्रयास करना चाहिए। इस हेतु उन्हें अपने समुदाय के साथ-साथ अपने समाज व राष्ट्र को भी अपना समझने और उसके विकास हेतु योगदान देने की सीख देनी चाहिए।
4. **शिक्षार्थियों को उत्पादक एवं सृजनात्मक क्रियाओं में संलग्न करना (Indulge the students in productive and creative activities)**
मदरसा शिक्षकों को सतही ज्ञान से हटकर मूलभूत आदर्शों, मूल्यों के विकास हेतु अपने

विद्यार्थियों के अंतर्निहित गुणों-अवगुणों का ज्ञान प्राप्त कर उन्हें सृजनात्मक एवं उत्पादक क्रियाओं में संलग्न करना चाहिए।

5. **सहपाठ्यचारी क्रियाओं पर बल देना (Give emphasis on co-curricular activities)**

मदरसो में पाठ्यक्रम का पूर्ण ज्ञान देने के साथ-साथ सहपाठ्यचारी क्रियाओं, जैसे—समूह कार्य, हस्तकौशल आदि का भी प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।

6. **आत्म—सम्मान का भाव विकसित करना (To develop the feeling of self respect)**

मदरसा शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों का सम्मान करते हुए उनमें आत्म—सम्मान व आत्म—प्रकाशन के भाव विकसित करने चाहिए। इसके लिए उन्हें अपने विद्यार्थियों को हीनदृष्टि से न दखते हुए उन्हें श्रेष्ठता प्रदान करनी चाहिए।

7. **अपने विचार प्रकट करने के अवसर देना (Give opportunities to experess their ideas)**

मदरसे में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को भी अपने विचारों को प्रकट करने के अवसर एवं उनको मूर्त रूप देने हेतु हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। इस हेतु सप्ताह में एक दिन के क्रियाकलाप ऐसे हों, जिनमें ये विद्यार्थी, अपने विचारों को प्रकट करें अथवा अपने विचारों को मूर्त रूप देने हेतु कुछ क्रियात्मक प्रयास करें।

8. **शिक्षकों द्वारा पूर्ण समर्पण भाव से शिक्षा देना (Give education with full dedication by the teachers)**

मदरसा शिक्षकों को मदरसों की शिक्षा व्यवस्था के संचालन में खानापूर्ति न करते हुए पूर्ण समर्पण भाव से अपने विद्यार्थियों को शिक्षित करना चाहिए और उनके अंतर्निहित गुणों को उजागर करते हुए सही दिशा में विकास हेतु उनका मागदर्शन करना चाहिए।

9. **अनुशासन बनाये रखना (To maintain discipline)**

मदरसों के अनुशासनहीन छात्रों को केवल दंड देकर ही अनुशासित नहीं किया जा सकता बल्कि उनके नकारात्मक गुणों के अंत हेतु उन्हें इस बात का अहसास कराया जाय कि उनके व्यवहार गलत हैं। उनके नकारात्मक व्यवहारों के अंत हेतु उनकी योग्यताओं का ज्ञान प्राप्त कर उन्हें अन्य सृजनात्मक क्रियाओं में संलग्न किया जाये ताकि उनके नकारात्मक व्यवहारों को पनपने का अवसर न मिल सके।

10. **पूर्ण मानव निर्माण की शिक्षा (Education for making complete man)**

मदरसा शिक्षा पूर्ण मानव निर्माण की शिक्षा होनी चाहिए। इस हेतु मदरसा शिक्षकों को पूर्ण समर्पण भाव से प्रयास करना चाहिए और अपने विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास के माध्यम से उनका चरित्र निर्माण करना चाहिए। साथ ही विद्यार्थियों के

शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक विकास द्वारा उनको पूर्ण मानव बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

मूल्यों के निर्माण में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है और इस्लाम में शिक्षा को विशेष स्थान दिया गया है। शिक्षा के माध्यम से न केवल धार्मिक बल्कि आधुनिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान की प्राप्ति को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। अतः विभिन्न प्रकार के ज्ञान के संप्रेषण एवं विद्यार्थियों में मूल्य निर्माण में मदरसा–शिक्षकों की भूमिका बढ़ जाती है। चूँकि वर्तमान समय में भी मुस्लिम समुदाय में मदरसे प्रमुख शैक्षिक संस्थानों के रूप में संचालित हैं, अतः इनके शिक्षकों का कार्य न केवल शिक्षा प्रदान करने में बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, विभिन्न नैतिक मूल्यों के विकास हेतु काफ़ी महत्वपूर्ण हो जाता है ताकि इन मदरसों से निकलने वाले छात्र न केवल नियमित विद्यालयों, महाविद्यालयों में समाहित हो सकें बल्कि राष्ट्र के कुशल एवं ज़िम्मेदार नागरिक बन सकें और मदरसों के छात्रों एवं मदरसों से जुड़े मिथकों अथवा वर्तमान में प्रचलित धारणाओं को झूठा साबित कर सकें।

संदर्भ

अख़्तर, परवेज़. 1998. *मुस्लिम समुदाय में शैक्षिक पिछड़ापन (वाराणसी नगर पर आधारित एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन),* अप्रकाशित पीएचडी रिसर्च, सोशियोलॉजी, बी.एच.यू. वाराणसी.

एनसीईआरटी. 2012. *एजूकेशन फ़ोर वेल्यूज़ इन स्कूल्स्–ए फ्रेमवर्क* नयी दिल्ली.

करजावी, अल्लामा यूसुफ़. 2000. तालीम की अहमियत. मर्काज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, नयी दिल्ली.

काज़मी, ए.एच. (एड.). 2006. *इंटरनेशनल एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ इस्लाम.* इस्लाम इस्लाम एंड एजुकेशन (वॉल–VIII), ईशा बुक्स, नयी दिल्ली.

''कॉन्सेप्ट ऑफ़ रियेलिटी, नॉलेज एंड वेल्यू इन इस्लाम'', रिट्राइव्ड जुलाई 4, 2013, फ्रॉम http://.www.edu.blogspot.in/search/label/concept%200F%20 REALITY.

कुमार, सतीश. 2009. *इन्कलकेशन ऑफ़ ह्यूमन वेल्यूज़ इन एजुकेशन,* थॉमसकुट्टि, पी.जी. एंड जॉर्ज, मैरी (एड). ह्यूमन राइट्स एंड वेल्यू इन एजुकेशन, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नयी दिल्ली.

फ़ैज़ल, पी.एन. 2009 वेल्यूज़ इनकलकेटिंग अमंग हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स (ए सेंटरड् एपरोच). थॉमसकुट्टि, पी.जी. एंड जॉर्ज, मैरी (एड.). ह्यूमन राइट्स एंड वेल्यू इन एजुकेशन, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नयी दिल्ली.

भास्कराचार्युलु, वाई एंड राव, डी. पुल्ला. 2009. द *रोल ऑफ़ टीचर्स इन स्ट्रेंथनिंग वेल्यू एजुकेशन.* थॉमसकुट्टि, पी.जी. एंड जॉर्ज. मैरी (एड.). ह्यूमन राइट्स एंड वेल्यू इन एजुकेशन, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नयी दिल्ली.

राय, गीता. 2005. *भारतीय चिंतन एवं शिक्षा.* द ओ.एस.डी. (पब्लिकेशन सैल), बीएचयू, वाराणसी.

सिंकद, योगिन्दर. 2005. *बेस्टिअनस् ऑफ़ द बिलीवर्स, मदरसाज़ एंड इस्लामिक इंस्टीट्यूशन इन इंडिया.* पेंगुइन बुक्स, नयी दिल्ली.

सुकुमार, सेमुअल. 2009. वेल्यू एजुकेशन इन करिक्यूलम. थॉमसकुट्टि, पी.जी. एंड जॉर्ज, मैरी (एड.). ह्यूमन राइट्स एंड वेल्यू इन एजुकेशन, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नयी दिल्ली.